अध्याय- 1

प्रस्तावना

मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक शिक्षा की आवश्यकता रहती है। प्रत्येक समय मनुष्य को शिक्षा का प्रभाव दिखाई देता है। मनुष्य का अस्तित्व बिना शिक्षा के उसी प्रकार है जिस प्रकार बिना पतवार के नाव होती है। शिक्षा व्यक्ति के प्रत्येक पहलू को विकसित करके उसका चारित्रिक निर्माण करती है एवं व्यक्ति के व्यवहार, विचारों, भावनाओं, तथा ज्ञान की वृद्धि में सहायक होती है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा सिर्फ मनुष्य और पशु में ही अंतर स्थापित नहीं कर सकते बल्कि मानव का मानव से भी अंतर का पता चलता है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण करती है, चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है और व्यक्ति को संस्कारित करती है। शिक्षा स्वयं को व अपनी शक्तियों को पहचानने की क्षमता का विकास करती है। शिक्षा सीखना नहीं है, वरन मस्तिष्क की शक्तियों का अभ्यास और विकास है। शिक्षा के इस परिप्रेक्ष्य के कारण ही वर्तमान समय में सबसे ज्यादा शोधकार्य बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन पर हो रहा है।

अकादमिक प्रदर्शन के द्वारा ही पता चलता है कि बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कितना हुआ है, कैसे हो रहा है, उनके व्यक्तित्व विकास को और कैसे बेहतर बनाया जाए? यहाँ पर ध्यान देना होगा की सिर्फ बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन से सिर्फ उनके व्यक्तित्व विकास का ही पता नहीं चलता बल्कि उनके संज्ञानात्मक और भावात्मक विकास का भी पता चलता है। **मुदालियर एवं कोठारी आयोग (1964)** ने शिक्षा के उद्देश्य में जनतंत्रात्मक नागरिकता की भावना का विकास, व्यक्तित्व का विकास, नेतृत्व का विकास, राष्ट्रीय भावात्मक एकता, विश्व-बंधुत्व तथा अंतर्राष्ट्रीय भावना, सच्ची देशभक्ति, जीवन के मूल्य तथा दिशा का निर्माण, प्रतिभाओं की खोज और आदर, वैज्ञानिकता एवं व्यवसायिकता का मूल्यांकन को प्रमुखता से बताया।

संज्ञानात्मक विकास के अंतर्गत हम जान सकतें हैं कि बच्चों की अधिगम क्षमता, स्मृति, उनके समस्या-समाधान की क्षमता एवं किसी के प्रति सोचने की क्षमता में किस स्तर पर एवं कितना विकास हो रहा है। वर्तमान समय में बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन को लेकर सिर्फ शिक्षक ही नहीं बल्कि उनके माता-पिता भी चिंतित रहते हैं। प्रायः देखा जाता है कि लोग अकादमिक प्रदर्शन से तात्पर्य बच्चों द्वारा स्कूल में प्राप्त प्राप्तांक से लगाते हैं, जो कि पूर्णतया गलत है। माता-पिता एवं शिक्षक की इस सोच के परिणामस्वरूप बच्चों में नकारात्मक भावना का

विकास होता है, उनमें एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या होने लगती है। वे सोचते हैं कि कैसे वे दूसरे बच्चों से अधिक अंक प्राप्त कर ले। इसके लिए वे दूसरे बच्चों को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते हैं। कभी-कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि वे अपनी इसी नकारात्मक भावना से ग्रसित हो आत्महत्या करने का प्रयास करने लगते हैं। वे दूसरे बच्चों के प्रति कभी भी सकारात्मक ढंग से नहीं सोचते हैं। बच्चों के द्वारा परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक उनका अकादमिक प्रदर्शन नहीं होता बल्कि यह तो बच्चों का कक्षा प्रदर्शन है, जो कि अकादमिक प्रदर्शन का एक भाग होता है। **लियोनोफ डेबोरे, जे. (1993)** ने बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में व्यक्तित्व कारकों और अभिभावकों के सहयोग का अध्ययन किया एवं पाया कि उच्च उपलब्धि प्राप्त छात्रों की तुलना में निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्र स्वयं को अभिभावकों से उपेछित महसूस करतें हैं। निम्न उपलब्धि प्राप्त छात्रों में व्यक्तिगत कारकों के मध्य विभिन्नता थी। **स्टेफेंस एवं स्काबेन (2002)** ने अपने अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी सह-पाठ्योत्तर गतिविधि में भाग लेते हैं उनका औसत ग्रेड पॉइंट 3.0 अथवा उससे अधिक होता है, अपेक्षाकृत जो अन्य गतिविधियों में भाग नहीं लेते।

अकादमिक प्रदर्शन से तात्पर्य यह भी होता है कि पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्यार्थी किन-किन गतिविधियों में भाग लेता है यथा- खेल-कूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता, कार्टून बनाना, स्केचिंग, नृत्य करना, संगीत, मेहंदी, कृषि कार्यों में रूचि लेना आदि। इन सबको पाठ्येत्तर गतिविधि कहा जाता हैं। यदि बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों में भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो उनके संज्ञानात्मक क्षमत्ता (अधिगम, स्मृति, समस्या-समाधान, बुद्धि-लब्धि, सोचने की क्षमता, तर्कपूर्ण योग्यता) में वृद्धि होती है। पाठ्येत्तर गतिविधियों में भाग लेने से सिर्फ उनके संज्ञानात्मक क्षमता का ही विकास नहीं होता बल्कि उसके साथ उनके भावात्मक और संक्रियात्मक क्षमता का भी विकास होता है।

स्कूल में बच्चों को सिर्फ पाठ्यक्रम को पढ़ाने पर ही विशेष बल दिया जाता है, पाठ्यक्रम के द्वारा ही हम सिर्फ बच्चों के विकास की कल्पना नहीं कर सकते। यदि हमें बच्चों का बहुमुखी विकास करना है तो उन्हें पढाई के साथ-साथ अन्य पाठ्येत्तर गतिविधियों में भी भाग लेने के लिए प्रेरित करना होगा। पाठ्येत्तर गतिविधियों जैसे- खेल-कूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता, स्केचिंग, कार्टून बनाना, संगीत, नृत्य, कृषि कार्य आदि में भाग लेने से बच्चों में नैतिक मूल्यों के साथ-साथ अन्य मानवीय गुणों का भी विकास होता है साथ ही उनकी कौशल क्षमता में भी वृद्धि होती है। **गर्ग, चित्रा (1997)** ने हाईस्कूल के अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक-

आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा समायोजन का अध्ययन किया। अपने अध्ययन मे इन्होनें पाया कि पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन के मध्य संबंध होता है। **अग्रवाल, रेखा एवं कपूर, माला (1998)** ने प्राथमिक स्तर पर बालकों की शैक्षिक क्रियाओं में माता-पिता की सहभागिता का अध्ययन किया। परिणाम मे पाया कि माता-पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पथ प्रदर्शन बालकों के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करता है।

समय-समय पर आवश्यकतानुसार शिक्षा का अर्थ तथा महत्व बदलता रहा है। प्राचीनकाल में शिक्षा का अभिप्राय आत्म-ज्ञान तथा आत्म-प्रकाश के साधन के रूप में लिया जाता था। प्राचीन यूनान में व्यक्ति को राजनैतिक, मानसिक, शारीरिक, एवं नैतिक सौन्दर्य के लिए शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन समय में रोम में शिक्षा का उद्देश्य केवल वीर सैनिक उत्पन्न करना था। आधुनिक समय में, शिक्षा के व्यापक अर्थ में शिक्षा को गतिशील माना गया है तथा शिक्षा को आजीवन चलने वाली प्रक्रिया बताया गया है।

अकादमिक प्रदर्शन से तात्पर्य बालक का अपने पाठ्यक्रम के अलावा अन्य पाठ्येत्तर गतिवधियों (खेल-कूद, संगीत, कला, नृत्य, वाद-विवाद प्रतियोगिता, समाजोपयोगी कार्य आदि) से है जिससे विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास होता है। माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। विद्यार्थियों का शैक्षिक/अकादमिक प्रदर्शन (चूंकि यह उनके (विद्यार्थियों के) जीवन की दिशा को निर्धारित करती है तथा उनके भावी लक्ष्य को पाने में सहायक होती है) उनके माता-पिता एवं शिक्षकों के लिए सदा से चिंता का विषय रहा है। शिक्षा का माध्यमिक स्तर विद्यार्थी जीवन का निर्णय काल होता है, इसी समय वे अपने भावी जीवन एवं व्यवसाय संबंधी निर्णय लेते हैं। **ब्रोह (2002)** ने अकादमिक प्रदर्शन, पाठ्योत्तर गतिविधि, ग्रेड पॉइंट, शैक्षिक आकांक्षा एवं स्कूल उपस्थिति को लेकर अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होनें पाया कि जो विद्यार्थी पाठ्योत्तर गतिविधि में भाग लेते हैं उनका औसत ग्रेड अंक, उच्च शैक्षिक आकांक्षा, स्कूल उपस्थिति में वृद्धि और अनुपस्थिति में कमी पाई गई। **ओसांग (2003)** ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन में गणित और आत्म-संप्रत्यय का अध्ययन किया, अपने अध्ययन में उन्होनें पाया कि विद्यार्थियों का गणित में प्रदर्शन उनके आत्म-संप्रत्यय पर निर्भर करता है, जो कि यह उनके गणित की उपलब्धि पर निर्भर करता है कि वो गणित को एक विषय के रूप में कैसे सोचतें हैं और गणित को किस संदर्भ में लेते हैं।

माध्यमिक शिक्षा को विभिन्न रुपों में, विभिन्न कालों में तीन रूपों में पहचाना जा सकता है- स्थिति, प्रकार, स्तर। स्थिति की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा वह है जो प्राथमिक शिक्षा के बाद आती है। प्रकार की दृष्टि से यह निश्चित बौद्धिक वस्तुओं के विभाजनीकरण से जुड़ी होती है, इसमें निरंतर परिमार्जन व विकास होता रहता है। स्तर से तात्पर्य बौद्धिकता की वह कसौटी है जिस पर वह विश्वविद्यालयी ज्ञान अर्जित कर सके। माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि के सामाजिक-आर्थिक स्तर के सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि 96% विद्यार्थी परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण शिक्षा छोड़ देतें हैं। इसमे अभिभावक की शिक्षा, व्यवसाय, परिवार की आय, परिवार का आकार एवं घर के सांस्कृतिक स्तर के आधार पर जो विद्यार्थी उच्च गुणात्मक समूह से संबंध रखते है, वे उच्च शैक्षिक उपलब्धि व सार्थक भागीदार बनते हैं **(चोपड़ा, 1964)।**

वर्मा, श्रीमती अनुराधा (2007) ने माध्यमिक स्तर के निम्न निष्पादन प्राप्त विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों व व्यावसायिक अभिरुचि का अध्ययन किया। परिणाम में पाया कि निम्न निष्पादन के विद्यार्थी तथा उच्च निष्पादन के विद्यार्थी के नैतिक मूल्यों व व्यावसायिक अभिरुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता। **दबे शैली (2007)** ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिरुचि का अध्ययन किया और निष्कर्ष पाया कि नौकरी के प्रति सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थी अलग-अलग अभिवृत्ति दिखातें हैं, जबकि व्यापार के प्रति उनकी अभिवृत्ति समान है। **मौला, जे॰ एम॰ (2010)** ने कक्षा 8 स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और गृह वातावरण के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया और पाया कि गृह वातवरण (पिता का व्यवसाय, माता का व्यवसाय, पिता की शिक्षा, माता की शिक्षा, परिवार का आकार, घर में पढ़ने की सुविधा) तथा शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा की बीच सकारात्मक संबंध होता है। छात्र के गृह वातवरण के प्रकार पर छात्र की अभिप्रेरणा और शैक्षिक कार्य की प्रगति निर्भर करती है।

माध्यमिक शिक्षा का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भाग रहता है। यह बालकों में रुचि, आदत, अभिवृत्ति, बौद्धिक विकास, कार्यकुशलता, सामाजिकता क्रियाशीलता इत्यादि गुणों का विकास करनें में सहायक होती है। देश की आर्थिक उन्नति का दृढ़ आधार माध्यमिक शिक्षा ही होती है, क्योंकि किसी भी व्यवसाय में बालकों का प्रवेश माध्यमिक शिक्षा के बाद ही होता है। माध्यमिक शिक्षा का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भाग रहता है। यह बालकों में रुचि, आदत, अभिवृत्ति, बौद्धिक विकास, कार्यकुशलता, सामाजिकता क्रियाशीलता इत्यादि गुणों का विकास करनें में सहायक होती है। देश की आर्थिक उन्नति का आधार भी माध्यमिक शिक्षा ही होती है, क्योंकि

किसी भी व्यवसाय में बालकों का प्रवेश माध्यमिक शिक्षा के बाद ही होता है। **एत्से एवं अन्य (2004)** ने घाना के सरकारी एवं निजी विद्यालय के अकादमिक प्रदर्शन का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होनें पाया कि घाना के निजी विद्यालय का अकादमिक प्रदर्शन अच्छा होता है, अपेक्षाकृत सरकारी विद्यालय के। इसका कारण यह है कि निजी विद्यालय में कार्य का पर्यवेक्षण बहुत ही प्रभावी ढंग से होता है। **त्रिपाठी, कुमुद (2004)** ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग, परिवेश व उपलब्धि अभिप्रेरणा पर कार्य किया और पाया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा का अधिक प्रभाव पड़ता है, जबकि लिंग एवं परिवेश का प्रभाव नहीं पड़ता है। **चरण, अर्चना (2005)** ने वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन किया, इनके अध्ययन का उद्देश्य उच्च, मध्यम एवं निम्न शैक्षणिक स्तर के विद्यार्थियों की पहचान करना था। अपने अध्ययन में उन्होनें पाया कि उच्च, मध्यम, तथा उच्च एवं और निम्न तथा मध्यम व निम्न शैक्षणिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में कोई अंतर नहीं है।

माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है जो मुख्य रूप से लगभग 12 से 17 वर्ष के बीच की आयु के लिए होती है। इसमें शिक्षा का बल सीखनें के आधारभूत साधनों, अभिव्यक्ति और अवबोध से हटना शुरू हो जाता है। बल का केंद्र अब इस बात की खोज करने पर होता है कि इन साधनों का उपयोग विचार और जीवन के क्षेत्रों में किस प्रकार किया जा सकता है। किशोर अब सूचनाओं, संप्रत्ययों, बौद्धिक कौशलों, अभिवृत्तियों, सामाजिक-शारीरिक-बौद्धिक आदर्शों, आदतों, अवबोध आदि की खोज करनें लगता है और उन्हें अपनानें की कोशिश करता है इसमें प्रायः विद्यार्थी की आवश्यकताओं और रुचियों के आधार पर विभेद किया जाता है। यह शिक्षा अपने आप में पूर्ण भी हो सकती है और आगे की शिक्षा के लिए तैयार करनें वाली भी हो सकती है। विद्यार्थियों के अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उनकी उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके माता-पिता की उनके शैक्षिक मामलों या कार्यों की रुचि से जुड़ी हुई है।

जॉन होल्ट (2009) ने *अपनी पुस्तक 'बच्चे असफल कैसे होते हैं?'* माध्यम से बच्चों की असफलता के कारणों को बताया। पैंतेरेबाजी के अंतर्गत उन्होनें बताया है कि बच्चे कक्षा में अनेक प्रकार कि युक्तियों को अपनातें हैं जिससे वे अध्यापकों के प्रश्नों से बच सकें। साथ ही उन्होने बताया है कि बच्चे किस प्रकार कक्षा में अध्यापको से डरते हैं। बच्चों को सफल करने के लिए अध्यापक उन्हें अनेक प्रकार से डराते हैं। जिससे बच्चों का

आंतरिक अभिप्रेरणा का स्तर निम्न हो जाता है। किस प्रकार बच्चों को वास्तविक ज्ञान से दूर रखा जाता है? बच्चों को वास्तविक समस्याओं को हल करना नहीं सिखाया जाता , बल्कि बस उन्हे यह बोला जाता है कि वे समस्या का सही हल लेकर आयें। स्कूल कैसे असफल हो रहें है? के संदर्भ में कहा है कि स्कूल अनेक प्रकार की गलत रणनीतियों के माध्यम से बच्चों में भय जगाते हैं। परीक्षा के पहले अध्यापक बच्चों को परीक्षा में जिस प्रकार के प्रश्न आने वाले होते हैं, उसी प्रकार के प्रश्नों का अभ्यास करवातें है। यह उसी प्रकार से है जिस प्रकार पावलाव अपने प्रयोग में कुत्ते को अनुबंधित करतें हैं।

जॉन होल्ट (2010) ने अपनी दूसरी पुस्तक 'असफल स्कूल' में स्कूल की असफलता के कारणों को बताया है कि प्रत्येक बच्चा स्वतंत्र रूप से रहना चाहता है, उसे अपनी दुनिया को सीखनें की एक अलग ललक होती है। शिक्षा कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे कोई दूसरा ले सके। यह एक ऐसी चीज है जिसे व्यक्ति को खुद हासिल करना होता है। शिक्षकों को यह समझनें का प्रयास करना चाहिए कि स्कूल बच्चों को कैसा लगता है। स्कूल में पहली बार आने वाला बच्चा बहुत ही जिज्ञासु, और सीखनें के लिए उसमें भरपूर ऊर्जा होती है। शिक्षक बच्चों को खुद सीखनें नहीं देते हैं, वे सोचतें है कि बच्चें खुद से सीखनें के काबिल नहीं हैं। इस प्रकार बच्चों को खुद सीखनें नहीं दिया जाता है और उसे बताया जाता है कि वह निष्क्रिय है। इस तरह से बच्चा यह सीखता है की गलती करना, उलझन भी एक प्रकार का जुर्म है। बच्चों को स्कूलों में चुप रहनें को कहा जाता है इससे बच्चों में धीरे-धीरे चुप रहने की आदत पड़ जाती है। उनमें कुछ नया करनें की आदत का विकास नहीं किया जाता अपितु बच्चे यदि कुछ नया करनें को सोचतें भी हैं तो उनकी भावनाओं को दबानें का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार स्कूल बच्चों के लिए एक ख़राब जगह होता है, जहाँ पर उनकी भावनाओं को दबाया जाता है। शिक्षक बच्चों को अधिक अंक लानें के लिए प्रेरित करतें हैं, उनके व्यक्तित्व के विकास पर वे ध्यान नहीं देते हैं और वे बच्चों को इस अंधी दौड़ में लगा देतें हैं। स्कूल में अनिवार्य हाजिरी जेल की तरह है। बच्चे स्कूल में जाने के बाद ऐसा अनुभव करतें है की वे जेल में आ गयें हैं। स्कूलों को अपनी इस परम्परा से बाहर निकलना होगा तभी बच्चों का विकास हो पायेगा। यूनेस्कों की रिपोर्ट के अनुसार 14 वर्ष तक के 20% बच्चें स्कूलों में पढ़नें नहीं जा रहें हैं। यदि हम 2011 की जनगणना को देखें तो उससे स्पष्ट है कि 6 से 14 वर्ष कि आयु के लगभग 20 करोड़ बच्चों में से साढ़े तीन करोड़ बच्चे स्कूल के बाहर है। देश में अध्यापकों के 12 लाख से अधिक स्थान रिक्त पड़े हैं।

सेठी, नीतू (2011) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का गणित में शैक्षिक उपलब्धि का गणितीय अभिक्षमता से संबंध का अध्ययन किया और पाया कि विद्यार्थियों की उपलब्धियों और गणितीय अभिक्षमता में कोई सार्थक संबंध नहीं होता, विद्यार्थियों में गणितीय अभिक्षमता का उच्च और निम्न स्तर तथा गणित में उपलब्धि कोई सार्थक अंतर नहीं होता, राजकीय एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की गणितीय अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं होता। अभिभावक सहभागिता एक महत्वपूर्ण कारक है जो कि बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन को बढ़ाने में मदद करती है **(हारा & बुर्के, 1998; हिल & क्राफ्ट, 2003; मक्रोन, 1999; स्टीवेंस & बेकर, 1987)।**

नैरोबी के माध्यमिक स्कूलों में प्रतियोगी खेलों और अकादमिक प्रदर्शन में लिंग, स्कूल का प्रकार और सामाजिक आर्थिक स्तर को लेकर अध्ययन किया और पाया कि खिलाड़ियों का अकादमिक प्रदर्शन गैर खिलाड़ियों की अपेक्षाकृत बेहतर होता है **(रिंटाउगु, ई०जी०,1987)**। कक्षा प्रदर्शन बच्चों के आत्म-प्रत्यक्षण को प्रभावित करते हैं जैसे अध्यापक रेटेड कार्य और सामाजिक पैटर्न आत्म-सम्मान की भविष्यवाणी करते हैं जबकि सम्बंधित विषय में ग्रेड विद्यार्थी के आत्म-धारणा को प्रभावित कर सकते हैं **(होग, स्मित & हंसोन,1990)**।

विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन उनके माता-पिता एवं शिक्षकों के लिए सदा से चिंता का विषय रहा है, क्योंकि यह उनके जीवन की दिशा को निर्धारित करती है तथा उनके भावी लक्ष्य को पाने में सहायक होती है। शिक्षा का माध्यमिक स्तर विद्यार्थी जीवन का निर्णय काल होता है इस समय वे अपने भावी जीवन एवं व्यवसाय संबंधी निर्णय लेते हैं।

शोध का महत्व

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर जो भी शोध कार्य हुए हैं, उनमें उनके अकादमिक उपलब्धि को लेकर कार्य किया गया है। सिर्फ माध्यमिक स्तर पर ही नहीं अपितु विद्यार्थियों पर जो भी कार्य हुए है, सभी में उनकी अकादमिक उपलब्धि को मापा गया है, जो कि विद्यार्थियों के प्रदर्शन का पैमाना नहीं है, यह तो सिर्फ शैक्षणिक उपलब्धि है। जो विद्यार्थियों के मध्य प्रतियोगिता की भावना का विकास करता है। प्रस्तुत शोध अध्यन में विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन के प्रति उनके अभिभावक क्या सोचतें हैं, विद्यार्थियों के शिक्षकों का उनके अकादमिक प्रदर्शन के प्रति क्या दृष्टि है का अध्ययन करना है।

उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन के प्रति उनके अभिभावकों एवं अध्यापकों की राय को जानना है।
2. सरकारी और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन के प्रति उक्त भागीदारों की दृष्टि में अंतर है या नहीं। यदि अन्तर है तो किस प्रकार का अंतर है।

शोध प्रश्न

1. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन को लेकर कितने गम्भीर हैं।
2. अकादमिक प्रदर्शन बच्चों के संज्ञानात्मक, भावात्मक और संक्रियात्मक क्षमता को किस प्रकार और कितना प्रभावित करता है।

परिकल्पना

1. अच्छे प्रदर्शन की व्याख्या के विभिन्न आयामों पर सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय के अभिभावकों एवं अध्यापकों का प्रभाव पड़ता है।
2. खराब प्रदर्शन की व्याख्या के विभिन्न आयामों पर सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय के अभिभावकों एवं अध्यापकों का प्रभाव पड़ता है।